डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग

विशेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा

कर्मभूमि की समीक्षा

कर्मभूमि प्रेमचंद का प्रसिद्ध उपन्यास है। कर्मभूमि में काशी और हरिद्वार के पास के एक गाँव अर्थात दो स्थानों की कथा है। प्रेमचंद के लेखन की यह विशेषता है कि वे समाज की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। 'कर्मभूमि' में उन्होंने गरीबों, किसानों, मजदूरों, स्त्रियों की दयनीय स्थिति का सजीव चित्रण किया है। उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं – अमरकांत, समरकांत, सुखदा, सलीम, मुन्नी इत्यादि। गौण पात्र हैं – रेणुका देवी, सकीना, पठानिन, नैना आदि। उपन्यास के आरंभ में ही प्रेमचंद ने तत्कालीन शिक्षा – पद्धति पर कटाक्ष किया है, वे विदेशी शिक्षा पद्धति पर कटाक्ष करते हैं। ग्रामीण और नगरीय परिवेश के माध्यम से भी उन्होंने तत्कालीन समाज का जीवंत चित्रण किया है। प्रेमचंद गांधी जी के विचारों से अत्यधिक प्रभावित थे। उन्होंने सामाजिक विषमता को दूर करने की कोशिश अपने लेखन के माध्यम से किया। प्रस्तुत उपन्यास में भी डॉ.शान्तिकुमार तथा सुखदा अछूतों के मंदिर में प्रवेश को लेकर प्रयास करते हैं। आंदोलन किया जाता है, गोली चलती है, काफी संघर्ष के बाद अछूतों को मंदिर में प्रवेश का अधिकार मिल जाता है। सुखदा मजदूरों के आवास की समस्या के समाधान हेतु बोर्ड के सामने प्रस्ताव रखती है। बोर्ड की स्वीकृति न मिलने पर आंदोलन होता है, हड़ताल की जाती है, सुखदा को जेल भी जाना पड़ता है। उपन्यास में अनेक स्थान पर, अनेक स्तरों पर सामाजिक सुधार के कार्य हो रहे हैं। अमरकांत किसानों के साथ हो रहे लगान संबंधी मामले को सुलझाने का प्रयास करता है। सरकार निरंतर इन आंदोलनों को कुचलने का प्रयास करती है। अमर तथा सलीम को भी जेल जाना पड़ता है। बाद में बोर्ड के अनुरोध पर सभी को मुक्त कर दिया जाता है। किसानों की समस्या पर विचार करने हेतु सलीम, अमरकांत सहित पाँच लोगों की समिति बना दी जाती है। यह समिति किसानों की समस्याओं को सुलझाने के साथ साथ जातिगत भेदभाव को दूर करने का कार्य भी करती है। प्रमुख कथा के साथ साथ गौण कथाएं भी चलती रहती हैं। प्रमुख कथा अमरकांत तथा सुखदा की है, गौण कथाओं में मुन्नी, नैना, सलीम, डॉ. शान्तिकुमार की कथाएँ हैं।

प्रेमचंद के कथानकों की एक खास विशेषता यह है कि वे पहले समस्या को रखते हैं, कथा के माध्यम से परिवेश और परिस्थितियों का चित्रण करते हैं तो दूसरी तरफ परिस्थितियों और परिवेश के माध्यम से कथा में जान डालते हुए उसे आगे बढ़ाते हैं। शिक्षा की समस्या, किसानों की समस्या, अछूतों की समस्या, विधवाओं की समस्या, पारिवारिक झगड़े, धर्म के नाम पर भेदभाव इत्यादि सभी समस्याओं का चित्रण किया गया है।

यह उपन्यास यथार्थ पर आधरित है परंतु इसके अंत आदर्शवादी है। अतः यथार्थ और आदर्श के इस अद्भुत समन्वय को देखते हुए विद्वानों ने इसे आदर्शोन्मुख यथार्थवादी उपन्यास कहा है। प्रेमचंद महात्मा गांधी के विचारों से अत्यधिक प्रभावित थे, इस उपन्यास में वह प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। इस उपन्यास के माध्यम से प्रेमचंद ने

समानता का संदेश दिया है। इस उपन्यास में कर्म की महत्ता पर बल दिया गया है। प्रेमचंद पाठकों को समस्याओं से भली – भाँति अवगत करवाने के लिए समस्याओं की तह तक जाते हैं। उनकी दृष्टि से कोई भी समस्या अछूती नहीं रहती है। उनके द्वारा चित्रित समस्याएँ सामाजिक, आर्थिक,राजनीतिक तथा व्यक्तिगत स्तर की हैं। इन समस्याओं के माध्यम से उन्होंने तत्कालीन समाज का वास्तविक चित्र अंकित किया है।

तत्कालीन शिक्षा पद्धति पर प्रेमचंद चोट करते हैं, जो शिक्षा – प्रणाली अवगुणों पर आधारित होगी वह किसी समाज का भला कैसे कर पाएगी। उपन्यास का नायक ऐसी डिग्री की परीक्षा की आलोचना करता है, और डिग्री की परीक्षा में नहीं बैठता है। वह कहता है –

“जीवन को सफल बनाने के लिए शिक्षा की जरूरत है, डिग्री की नहीं। हमारी डिग्री है – हमारा सेवा – भाव, हमारी नम्रता, हमारे जीवन की सरलता। अगर यह डिग्री नहीं मिली, अगर हमारी आत्मा जागृत नहीं हुई तो कागज़ की डिग्री व्यर्थ है।“

उपन्यास कथानक, पात्र, संवाद, वातावरण उद्देश्य इत्यादि सभी बिंदुओं पर पूर्ण सफल है।